

**7.1.1 Number of gender equity promotion programs organized by the institution year-wise during the last five years.**







ORIENTAL COLLEGE  
PATNA CITY  
WOMEN'S EMPOWERMENT  
JAMAL-FATMA  
CONVENOR

Member of the Women's embo  
Worment cell

- (1) Dr Syed Eqbal Afzal chair Person  
Principal
- 2) Dr Jamal Fatma - Convenor
- 3) Dr Fauzia Perween - Member
- 4) Dr Hena Hussain - Member
- 5) Dr Yasmin Bano - Member
- 6) Dr Sarwat Tauheed - Member
- 7) Dr Seema Aziz - Member
- 8) Mrs Kausar Jaham - Member



07-03-18

सूचना  
महाविद्यालय के "महिला सशक्तिकरण परिषद"  
द्वारा कल दिनांक 8-3-2018 को अन्तरराष्ट्रीय  
महिला दिवस के अवसर पर एक संगीत  
का आयोजन किया जायेगा

अतः महाविद्यालय के सभी शिक्षक  
शिक्षिकाओं एवं छात्राओं की उपस्थिति  
अपेक्षित है।

स्थान :- गलस सभ्रान

समय :- 11.00 बजे उपराधन

*[Signature]*  
07.03.18

*[Signature]*  
Convener

*[Signature]*  
7.3.18

Seema Arora  
7.3.18

*[Signature]*  
7-3-18

*[Signature]*  
7-3-18

*[Signature]*  
07/03/18



## اورینٹل کالج میں یوم خواتین کے موقع پر پروگرام کا انعقاد

ہے۔ 1400 سال قبل جب اسلام دنیا میں آیا اور ہر کار کا عالم اس دنیا میں تعریف لائے تو عورتوں کے مقام کو بلند کیا۔ ان سے قبل بچیوں کو زندہ ڈر کر دیا جاتا تھا۔ آپ سہ ماہی نے خواتین کے حق سے لوگوں کو روشناس کرایا۔ یوم خواتین کو ہی دن منانا چاہئے جس دن اسلام نے خواتین کو ان کا حق اور زندگی جینے کا سلیقہ سکھایا۔ مہمان ممتاز کی حیثیت سے نائب پرنسپل ڈاکٹر ربیان مل نے اپنے خطاب میں کہا کہ آج خواتین ہر شعبہ میں ساری ہیں۔ ڈاکٹر فوجیہ پروین نے کہا کہ ہر شعبہ میں شراکت داری کے باوجود بھی خواتین کو ان کا حق نہیں ملا ہے۔ اس موقع پر ڈاکٹر نور حسن نظامی، ڈاکٹر ایس ایم بی فاطمہ، ڈاکٹر قرملی خاں، ڈاکٹر حنا جسٹین، درگا رائی، ڈاکٹر سما علیہ، کوثر جہاں، عندلیب مصطفیٰ محمد نسیم وغیرہ نے بھی اپنے خیالات کا اظہار کیا۔



پرنسپل اورینٹل کالج پٹنہ (بی ایس) اورینٹل کالج پٹنہ سٹی کے خواتین سٹی کی جانب سے آج گرلز سکشن میں یوم خواتین کے موقع پر ڈاکٹر جمال فاطمہ کی صدارت ڈاکٹر اقبال احمد کی نفاذ میں پروگرام کا انعقاد کیا گیا۔ اپنے صدارتی خطاب میں ڈاکٹر جمال فاطمہ نے کہا کہ آج خواتین ہر شعبہ میں اپنے مستحق مقام بن رہی ہیں۔ لیکن ابھی بھی محنت کی ضرورت ہے۔ مہمان خصوصی کی حیثیت سے ڈاکٹر سید اقبال افضل نے کہا کہ آج خواتین کی بات ہو رہی

News published in the Newspaper for  
the programme on Empowerment  
date



## प्रतिवेदन

8-3-2018

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आज दिनांक 8-3-2018 को महाविद्यालय के "महिला सशक्तिकरण परिषद" द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें महिलाओं से सम्बंधित विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया।

कार्यक्रम का अध्यक्षता परिषद की अध्यक्षा मैदिया डॉ० जमाल फातमा द्वारा स्वागत भाषण से किया गया। उन्होंने महिलाओं की वर्तमान परिस्थिति पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा बुनियादी तत्व है। शिक्षा अपने साथ जागरूकता लाती है, इसलिये शिक्षित और संसृष्ट स्त्री शक्ति से देश का मातृप बढ़ा जा सकता है। जब तक भारत की महिलाएँ सार्वजनिक जीवन में हिस्सा नहीं लेगी व तबकी नहीं कर सकती।

डॉ० एना हुसेन के अनुसार —  
स्त्री समाज का आधार है। परन्तु वह समाज के कुरीतियों के बचन से पीड़ित है। अशिक्षित, प्रथाप्रथा, बेमेल विवाह, बाल विवाह, दहेज और नजाने कितनी रीति रिवाजों से उसे जकड़ कर रख दिया है।

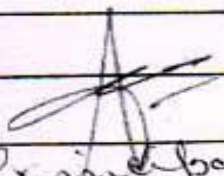


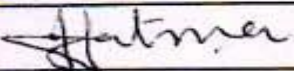
डा. फाजिया परवीन ने अपने  
भाषण में कहा कि 24 अप्रैल वर्ष को  
महिला सशक्तिकरण के लिए चुना गया  
है क्योंकि इसी दिन 73वां संविधान  
संशोधन लागू हुआ था जिसके तहत महिलाओं  
के लिए पंचायतों में एक तिहाई पर आरक्षित  
किया गया है। आजादी के बाद महिला की  
स्थिति सुधारे तथा उन्हें बराबरी का दर्जा  
देने के लिए विवाह-तलाक़ कानून, बच्चे  
की गोद लेने का अधिकार, शिक्षा प्राप्ति  
नाकुरी और व्यवसाय में स्वतंत्रता और एक  
पत्नी विवाह सम्बंधी समानता के कानून देश  
में पारित किया गया।

मुख्य अतिथि प्रिंसपल डा. अकबाल अफजल ने अपने भाषण में कहा कि आज से 1500 साल पहले जब इस्लाम दुनिया में आया तो उसी समय अरबों के मुकाम को उंचा किया गया क्योंकि इस्लाम से पहले लड़कियों को दफन कर दिया जाता था।

इसके अलावा डा. रबान अली, डा. बी फातमा, दुर्गा मवानी, सीमा अज़ीज़ ने अपने अपने विचारों को प्रकट किया।

संजीवनी के समापन में  
डा० फौजिया परवीन ने इन सभी को  
चन्दाबाद दिया जो इस संजीवनी मित्रों  
को विशेष कर प्राचार्य सयद अफजल  
आर प्राचार्य महदय डा० रबान  
अली को जो इतने कम समय में एक  
ही आवाज पर चल आये।

  
Principal

  
Hatma  
convenor



NOTICE

21.01.2019

सभी शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि 24.01.2019 को इब्राहिम खलाक खम नं 1 में 11.00 बजे "राष्ट्रीय बालिका दिवस" विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। आप सभी की उपस्थिति अनिवार्य है।

प्राचार्य

आदेशानुसार

डा० कविता पुनीषा

Halima  
convenor

डा० एना हुसैन

डा० पासमोन खाना

Dr. Bano

डा० सरवत लोदी

21.1.19

डा० सीमा उज्ज्वल  
शर्मिली कारर जहा

Kausar Jahan  
21.1.19



24.1.19

## REPORT

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर एक कार्यक्रम का आयोजन इलाहबाद जिले में किया गया। समावेश की शुरुआत आयोजक डा० जमाल फातमा के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने बताया कि बालिका दिवस की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र में किया। 19 December 2011 को U.N.O ने निर्णय लिया था कि हर साल 11 October को अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाया जाये। 24 जनवरी 2018 से प्रधान मंत्री मादी जी ने राष्ट्रीय बालिका दिवस पूरे देश भर में मनाने का फैसला किया। इस दिन की शुरुआत बालिका के अधिकारों की रक्षा करने और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के मकरन्द से की गई है। इस परिचय को आगे बढ़ाते हुए डा० कोण्ड्या परबे ने कहा कि बालिकाएं मानव जीवन एवं संस्कृति की जड़ हैं। समाज में उसका महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण स्थान है। अगर बालक से वंश की वृद्धि होती है, तो बालिकाओं से वंश का गौरव बढ़ता है।



डॉ. हेना दुसन ने बताया कि  
बेटों के बिना घर उसी तरह सुना लगता  
है जिस तरह फूलवारी बिना फूल के। बेटों  
प्रकृति की अनुपम देन है। वह घर की शोभा  
तथा रेशमी होल है।

प्राचार्य डॉ. संपद इकबाल अफजल  
ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि  
सरकार ने बहुत सी योजनाएं बनाई हैं जो  
बालिकाओं की रक्षा एवं सहयोग के लिए  
लाभदायक हैं।

- ① लाडली लक्ष्मी योजना
- ② मांगण श्री योजना
- ③ सुकन्या समृद्धि योजना
- ④ चनलक्ष्मी योजना
- ⑤ मुख्यमंत्री सुम लक्ष्मी योजना
- ⑥ लाडली बेटों योजना
- ⑦ कन्या विवाह योजना
- ⑧ बेटों के अनमोल योजना
- ⑨ गर्ल चाइल्ड प्रोटेक्शन स्कैम
- ⑩ बाल रक्षक योजना

इसके अलावा प्रधानमंत्री ने सातवृत्त  
योजना तथा बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजना  
बनाई। तथा मुख्यमंत्री ने बिहार में कन्या  
उत्थान योजना को शुरुआत 19 April 2018  
से किया। इसके अलावा बेटों बचाओ



लेटी पटाओ " जैसे स्क्रीम का लागू  
क्रिया जिसके तहत की ई मी गरीबों  
बच्चों को पढ़ने में रुकावट नहीं होगी

डा० फारहत जबी के अनुसार  
जब एक लड़के का शिक्षा मिलती है तो  
भारत का एक नागरिक शिक्षित बनता  
है। मगर जब एक लड़की का शिक्षा  
मिलती है तो एक पूरा परिवार शिक्षित  
बनता है।

कार्यक्रम का समापन डा० सीमा  
के चन्यबाद स्थापन से हुआ। उन्होंने  
समा में उपस्थित सभी शिक्षकगण एवं  
छात्र छात्राओं को उनके बहुमूल्य समय  
देने तथा समा को सफल बनाने के  
लिए चन्यबाद दिया।

Principal

convenor  
Hatma

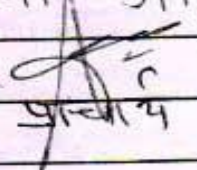


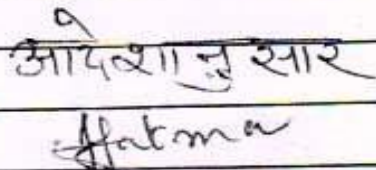
6-10-18

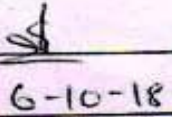
सूचना

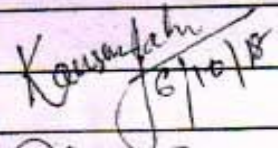
महा विद्यालय के सभी शिक्षक गण एवं छात्र, छात्राओं को सूचित किया जाता है कि महा विद्यालय के हाल नं 4 में दिनांक 10-10-18 को एक गोष्ठी आयोजित की गई है, जिसका विषय है -  
"महिलाओं की उन्नति"

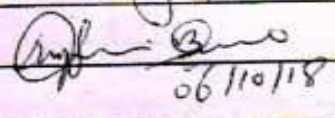
अतः सभी छात्र एवं छात्राओं को 12 बजे दिन में हाल में उपस्थित होना अनिवार्य है।

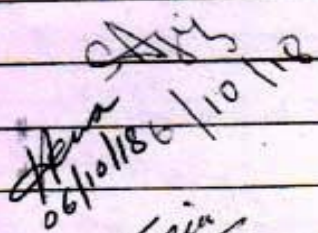
  
प्राचार्य

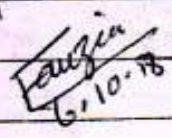
  
आदेशानुसार  
Hafiza

  
6-10-18

  
Koushik  
6/10/18

  
06/10/18

  
06/10/18

  
Fauzia  
6.10.18



10-10-18 को हाल नम्बर चार में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में प्राचार्य और उप-प्राचार्य के साथ साथ छात्र एवं छात्राओं में सम्मिलित हुई। संगोष्ठी का आयोजक डॉ. जमाल फात्मा महिलाओं की उज्ज्वल भविष्य का कामना करते हुए कहा कि देश एवं राष्ट्र की उन्नति का दायरमदार स्त्री जाति पर टिका हुआ है न कि वह पुरुष के शंकापन को मिटाकर उसे पूर्ण बनाती है। उन्होंने ज्ञानी समाज अरस्तू के कथन को दोहराते हुए कहा कि "स्त्री की उन्नति अन्नोत्पत्ति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अन्नोत्पत्ति निर्भर है।"

प्राचार्य महोदय डॉ. सयद इकबाल अफजल ने कहा कि 19वीं सदी की शुरुआत से ही महिलाओं की दशा में परिवर्तन शुरू होने लगा है। उन्हें आधी आबादी के रूप में सम्मान मिलने लगा है। हर जगह सरकार महिलाओं को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रही है।



इसके अलावा महिलाओं को अपने अन्दर बदलाव लाना होगा और सरकार में जो समानता दी है उसे लेने की कोशिश करेगा। अपने अधिकारों को पहचानना होगा।

डा० सरवत लोदी ने बताया कि महिलाओं को पुरम्परा और खादियों की जंजीरों में बंधी थी वह तोड़ चुकी है।

डा० पासमान बानो के अनुसार शिक्षा के द्वारा महिलाओं को वकील, डाक्टर, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, प्रोफेसर और पायलट हैं। उनकी उमिर न्याँद तथा अंतरिक्ष तक है।

डा० फाजिया परवीन ने आने वाले शिक्षकगण छात्र छात्राओं को व्याख्यात किया और कहा कि शिक्षा और कानूनी अधिकार मिलने से समाज महिलाओं का समाज में उनका खतबा बढ़ा है। लोग इज्जत की निगाह से देखते हैं। शिक्षा के कारण ही महिलाओं पुरुषों से आगे निकल रही है।

Principal

Hatmar  
Convenor



सूचना

05-07-2018  
Time 11.A.M.

महाविद्यालय के सभी शिक्षक गण एवं छात्र, छात्राओं को सूचित किया जाता है कि महाविद्यालय के हाल नं-1 में दिनांक 05-07-2018 को एक गोष्ठी आयोजित की गई है, जिसका विषय है — "घरेलू हिंसा" - जिसका मुख्य प्रवक्ता श्रीमती डा० मंजू देवी होंगी।

अतः सभी छात्र/छात्राओं को इस गोष्ठी में उपस्थित होना अनिवार्य है।

*[Signature]*  
05/07/18  
5/7/18

आदेशानुसार  
*[Signature]*

Fauzia  
5.7.18

5/7/18

KausarJahan  
5/7/18

*[Signature]*  
5/7/18



7.7.2018

## Report

दिनांक 7.7.18 को कॉलेज के परिसर के अंतर्गत (छात्राखंड) में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका शीर्षक है "धरती हिंसा"। संगोष्ठी की शुरुआत डॉ० जमाल फातमा के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने बताया कि हिंसा क्या है। अहिंसा का आभाव हिंसा है। जिस देवता के साथ राक्षस, पुण्य के साथ पाप है उसी तरह हिंसा के साथ हिंसा है। अर्थात् हिंसा का सम्बंध हमारे मन से है। हिंसा का प्रदर्शन हमारे मन, वचन तथा शारीरिक क्रिया द्वारा होता है। इसमें सबसे अधिक धातकारक हिंसा शारीरिक हिंसा है जो एक मनुष्य के विरुद्ध दूसरे मनुष्य पर खुला हुआ अपराध है जो कि शारीरिक रूप से उस पर जानबुझ कर किया गया है। इसमें अपराध करने वाले की इच्छा जरूर शामिल होती है। उसका उद्देश्य दूसरे को शारीरिक कष्ट पहुँचाना होता है।

सूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष  
डॉ० डॉ० मंजू दुबे जी इस संगोष्ठी की



मुख्य अतिथि है। इस परिचर्चा की आगे बढ़ते हुए कहा कि हिंसा का सबसे विनाशकारी रूप "घरेलू हिंसा" है। घरेलू हिंसा एक ऐसी हिंसा है, जिसमें व्यक्ति का जीवन, सुख-शान्ति तथा परिवार बिखर जाता है। घरेलू हिंसा एक व्यापक रूप से विस्तृत हिंसा है जिसके चपट में अनपढ़ से लेकर बड़े जीवी, गाँव से लेकर महानगर तक आते हैं। इसके सबसे ज्यादा शिकार महिलाएँ होती हैं। क्योंकि पुरुष प्रधान समाज है। महिलाओं पर हिंसा करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है।

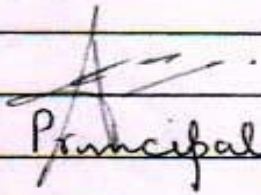
डा० सीमा अजीज ने बताया कि स्त्री के साथ जुड़े दान और दहेज ने घरेलू हिंसा को बढ़ाने में मदद की है। परन्तु दहेज निवारक अधिनियम 1961 में पारित कर कुछ दय तक इस हिंसा पर लगाम लगाया।

संगोष्ठी के समापन पर डा० फौजिया परवीन ने कहा कि घर ही नहीं बाहर भी स्त्री स्त्री के लिये अत्यन्त खूब हिंसा कदम कदम पर बढ़े पसार खड़ी है। बलात्कार, समूहिक बलात्कार, लूटपाट, अपहरण एवं छेड़खानी यह सब शापक स्त्रियों का नसब बन चुका है।

डा० दुर्गा मवानी ने संगोष्ठी



में शामिल प्रो० मंजु दुबे, प्राचार्य तथा  
उपप्राचार्य के साथ डा० देना हुसैन,  
डा० फौजिया परवीन, डा० यासमीन,  
डा० फरहत जवा, डा० सुरवर नाहीद,  
डा० अफरीन सायरा को इस संगोष्ठी  
को सफल बनाने के लिए धन्यवाद  
दिया।

  
Principal

M Dubey  
17/11/18  
Chief Guest

Atma  
convenor